www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-4* *April 2025***

महिला कथाकार और उनकी सामासिक संस्कृति

डॉ0 पूनम चालिया

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, माता सुंदरी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश–

हिंदी कथा साहित्य में स्त्री कथाकारों की भूमिका और योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। प्रारंभिक दौर से लेकर वर्तमान समय तक स्त्री लेखन ने सामाजिक यथार्थ को अपनी विशिष्ट दृष्टि से देखा और प्रस्तुत किया है। स्त्रियाँ न केवल अपने अस्तित्व की पहचान के लिए संघर्ष करती रहीं, बल्कि उन्होंने साहित्य के माध्यम से सामाजिक विडंबनाओं, स्त्री पीड़ा, अकेलेपन और सांस्कृतिक जटिलताओं को स्वर दिया। बंग महिला की कहानी 'दुलाईवाली' को हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श की नींव के रूप में स्वीकारा जाता है, जिसमें स्त्री के अकेलेपन और सामाजिक उपेक्षा को मार्मिकता से उभारा गया है। यह कथा स्त्री की उस चुप पीड़ा की ओर संकेत करती है जिसे समाज पहचान तो लेता है, पर सहारा नहीं देता। हिंदी कथा साहित्य में स्त्री कथाकारों ने सामासिक संस्कृति के भीतर अपने अनुभवों और चिंताओं को स्थान देते हुए, स्त्री चेतना और आत्माभिव्यक्ति की सशक्त धारा प्रवाहित की है।

कीवर्ड्स– हिंदी कथा साहित्य, स्त्री लेखन, स्त्री विमर्श, दुलाईवाली, बंग महिला, स्त्री चेतना, अकेलापन, सामाजिक यथार्थ, स्त्री पीड़ा, सांस्कृतिक दृष्टि, सामासिक संस्कृति।

परिचय–

हिंदी कथा साहित्य में पुरुष कथाकारों के साथ स्त्री कथाकारों के साहित्य में भी सामासिक संस्कृति किसी न किसी रूप में हमें दिखाई पड़ती है.हिंदी कथा साहित्य में स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान है.वह अपनी पहचान के लिए लगातार जद्दोजहद कर रही हैं यदि हम हिंदी कथा साहित्य की समूची यात्रा को गौर से देखें तो हम यह पाते हैं कि अलग–अलग समय की स्त्री कथाकारों ने समाज को अपनी–अपनी दृष्टि से उसे परखा और स्त्री को उसके वास्तविक रूप में सामने लाने की कोशिश की हिंदी कथा साहित्य के प्रारंभिक दौर से ही स्त्री कथाकारों ने अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवाई है.बंग महिला ने अपनी दुलाईवाली कहानी के माध्यम से हिंदी कथा साहित्य में स्त्री को पहली बार उपस्थित किया.यह माना जाता है कि जब भी स्त्री विमर्श की बात आती है या हम स्त्री विमर्श की जड़ों की ओर जाने की कोशिश करते हैं.दुलाईवाली कहानी उस विशाल वृक्ष की जड़ की तरह ही है,जिसमें स्त्री अपने पूरे वजूद के साथ दिखाई पड़ती है और इसीलिए कहा जाता है कि बंग महिला ने दुलाई के माध्यम से स्त्री की दारुण कथा को कहा है। जिसमें मुख्य स्वर स्त्री के अकेलेपन की मुखरित करना है। जिसमें समाज की स्त्रियां उसके अकेलेपन को लेकर चिंता तो करती हैं पर साथ नहीं देतीं।

मुख्य भाग

भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले से लेकर साठोत्तरी दौर की महिला कथाकारों के बीच ऐसी पीढ़ी भी आई जिन्होंने अपनी कथा साहित्य में भारत की सामासिक संस्कृति को अलग–अलग रूपों को लाने की कोशिश की। बंग महिला,उषा देवी मित्रा, सुभद्रा कुमारी चौहान,ओमवती देवी,चंद्रकिरण आदि से होते हुए चित्रा मुद्गल,मन्नू भंडारी, नमिता सिंह, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, मेहरून्निसा परवेज, नासिरा शर्मा, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, अलका सरावगी, राजी सेठ, गीतांजलि श्री आदि अनेक ऐसे नाम हैं जिन्होंने अपने कथा साहित्य को भारत की

संस्कृति को ध्यान में रखते हुए रचा।

हमारे देश की सामासिक संस्कृति को छिन्न–भिन्न करने का मुख्य कारण हमारे समाज में पनप रही सांप्रदायिकता है। हिंदी कथा साहित्य में शायद ही कोई ऐसा रचनाकार हो जिसमें संप्रदायिकता पर अब तक कलम ना चलाई हो। देश में संप्रदायिकता के दुष्परिणामों को जितना पुरुष कथाकारों ने अपने कथा साहित्य का मुख्य विषय बनाया, उतना ही स्त्री कथाकारों ने भी। संप्रदायिकता को अपने कथा साहित्य का मुख्य विषय बनाया.क्योंकि आज के समय में किसी भी देश या विश्व की सबसे बड़ी चुनौती वहां पर ही सांप्रदायिकता और आतंकवाद हम यहां असगर वजाहत समकालीन तथा लेखकों के कथा साहित्य पर अपने विषय को केंद्र रखेंगे. इस समय हम यहां चंद्रकांता के लिखे उपन्यास "ऐलान गली जिंदा है", मनीषा कुलश्रेष्ठ का उपन्यास "शिगाफ", संजना कॉल का "पाषाण युग", गीतांजलि श्री का "हमारा शहर उस बरस", मृणाल पांडे का "पहाड़ पर पटरंगपुर" आदि अनेक उपन्यासों के माध्यम से हम देश की सामासिक संस्कृति और सामासिक संस्कृति को छिन्न–भिन्न कर संप्रदायिकता को समझने की कोशिश करेंगे.'शिगाफ' और ' ऐलान गली जिंदा है' दोनों कश्मीर समस्या पर लिखे गए महत्वपूर्ण उपन्यास हैं.शिगाफ की लेखिका अपनी नायिका अमिता के माध्यम से उस समय की साझी संस्कृति उसके स्वरूप हो बताती हैं कि– हां! बाहर जाकर हम बहुत आजाद हो गई हैं। अपनी जड़ों से आजाद अपने सांस्कृतिक धागों से आजाद, भाषा से आजाद, हम कहीं भी किसी भी संस्कृति में भूल जाने को आजाद हो गई हैं क्योंकि हमारे पास कोई चारा नहीं है.अपने वजूद से मोहभंग के बाद क्या बचता है। यह खुली जड़ों वाले दर्द बमुश्किल चलना सीख गए हैं.मगर कहां जड़ पकड़ेंगे या धराशाई हो जाएंगे कोई नहीं जानता कहां जाकर विलुप्त हो जाएगा.कश्मीरी पंडित का डायसपोरा" इस उपन्यास के लेखक इस उपन्यास के माध्यम से कश्मीर के विस्थापन और आतंकवाद के समाधान को ही नहीं प्रस्तुत करती,बल्कि उस महान की सामासिक संस्कृति के छिन्न–भिन्न होने के दर्द को भी व्यक्त करती हैं.क्योंकि कश्मीर के विस्थापन केवल हिंदुओं ने नहीं झेला, बल्कि वहां के रहने वाले बहुत सारे मुसलमानों ने भी विस्थापन के दर्द को झेला है। वहीं दूसरी तरफ चंद्रकांता का उपन्यास 'ऐलान गली जिंदा है' कश्मीर पर लिखा गया प्रसिद्ध उपन्यास है.ऐसा माना जाता है कि लेखिका ने ऐलान गली जिंदा है के माध्यम से केवल कश्मीर घाटी ही नहीं बल्कि भारत के हर गांव हर गली हर समाज में पनप रही सामासिक संस्कृति का चित्रण किया है– मैं किसी एक व्यक्ति या परिवार को नहीं बल्कि पूरे समाज को दृश्य लाना चाहती इसलिए मैंने एक प्रतीकात्मक गली चुनी ऐलानगली.जहां जीवन को चुनौती मानकर रहने वाले लोग रहते हैं मस्त ऐलान" जिसमें देश में धर्म और संप्रदाय के नाम पर लोगों को लगाया जा रहा हूं उस समय एलान गली के अनवर मियां, संसार चंद,दयाराम मास्टर जैसे लोग हिंदू मुसलमान संप्रदायिक सौहार्द के प्रतीक बनकर पाठकों के सामने आते हैं और उनकी यह कोशिश रहती है कि आने वाली पीढ़ियों में भी यह सौहार्द और सद्भाव बना रखें।" हमने तो ताउम्र अपना भाईचारा निभाया अभी भी शिवरात्रि ईद पर बधाइयां देने और गले मिले बिना चौन नहीं पड़ता लिहाज शर्म और दोस्ती पर जान कुर्बान करने को अभी भी तैयार बैठे हैं हम भला हिम्मत क्यों हारे अब चार हरूप पर एक शो करो की वजह से हम उम्र भर के लिए रिश्ते क्यों बिगा बिगाड़ें."। गीतांजलि श्री का उपन्यास 'हमारा शहर बरस' संप्रदायिकता पर लिखा गया एक जरूरी उपन्यास है.हम जानते हैं कि सांप्रदायिकता की सबसे बड़ी देन राजनीति होती है और राजनीति को साहित्य से अलग नहीं किया जा सकता.डॉ. राजेंद्र मिश्र के अनुसार–"अब यह मानना अनिवार्य है किस साहित्य को राजनीति से अलग नहीं रखा जा सकता.हिंदी साहित्य को प्रासंगिक रखना है तो उसे राजनीति से जूझना होगा,क्योंकि जब तक राजनीति का चेहरा मानवीय नहीं होगा तब तक साहित्य की सृजनात्मकता भी प्रासंगिक नहीं हो पाएगी।" इस उपन्यास में गीतांजलि श्री ने तीन मित्र हनीफ, शरद और श्रुति के आपसी संबंधों के माध्यम से देश में फैले संप्रदायिकता के सचित्र खींचा है। इस उपन्यास के बारे में आलोचक ज्योतिष जोशी सही कहते हैं कि–"गीतांजलि श्री का यह उपन्यास शरद, श्रुति और हनीफ की रिपोर्ट पर आधारित है; इसलिए टुकड़े टुकड़े में सच का बयान है पर है वह खुश और व्यवस्थित। मंदिर का बदमाश महंत मरकर कैसा सम्मान पाता है और उसके नाम पर किस तरह की राजनीति होती है। यह देख कर अपने देश में फैली मूर्खता का सही अंदाजा हो जाता है यह शहर भी एक प्रतीक है देश का और देवी मंदिर संप्रदायिकता का–" गीतांजलि श्री का उपन्यास हमारा शहर उस पर भारत की संप्रदायिकता को अनेक पहलुओं में रेखांकित करता है.जैसा कि हम जानते हैं कि भारत में संप्रदायिकता को धर्म से जोड़ा जाता है,लेकिन कोई व्यक्ति धार्मिक हो और वह संप्रदायिक भी हो यह कोई जरूरी नहीं। संप्रदायिकता के अनेक कारण हैं इसमें आर्थिक, जाति, वर्ण, भाषा आदि के आधार पर

कहीं ना कहीं संप्रदायिकता देश में किसी न किसी रूप में दिखाई देती है। इस उपन्यास की कथा नैरेटर अपने शहर का वर्णन करती हुई कहती है कि "उस वर्ष हमारे शहर में हिंदुओं ने शांतिप्रियता छोड़ दी थी। अब के ऐलान करके छोड़ी कि एक गाल पर तमाचा पड़ा था,तो दूसरा बढ़ा दिया पर तीसरा कहां से लायें? हम मजबूर हैं वह चीखे। मस्जिदों पर सवार होकर त्रिशूल की नोक पर देवी की पताका फहराने लगे। जो हमारे संग हुआ वही हमें उनके संग करना है.पाप का बदला पाप से चुकेगा। साधु संतों ने समाधि छोड़ दी और उपासना के एवज में ललकार गूंज उठी कि हमारी संताने जाती रहीं,हमारी बेटियां लुटती रहीं बेटा! हिजड़े हो क्या? ए वीर शिवाजी की संतान, भगत सिंह,राणा प्रताप के वंशज अर्जुन और भीम के पुत्रों,उठो! उन दोस्तों की बस्तियों को श्मशान बना डालो.बहुत हो गई तुम्हारी भलमनसी.दैत्यों और पिशाचों के जुल्म बढे तो देवताओं को भी क्रोध आ गया, उठो!" हमारे भारतवर्ष में साहित्य, संगीत, वेशभूषा, खानपान आदि सभी जगहों पर मिली–जुली संस्कृति विद्वान है। वहीं दूसरी ओर कलिकथा वाया बाईपास उपन्यास में लेखिका किशोर बाबू की कहानी के माध्यम से अपनी जमीन की सांस्कृतिक पहचान को बचाए रखने की जद्दोजहद को दिखाया गया है और साथ ही यह दिखाने की कोशिश की गई है कि पूंजीवादी विकास के चलते उसकी छिन्न–भिन्न होती सती की कथा किस तरह इस उपन्यास की लेखिका अलका सरावगी अपने देश की इतिहास की लंबी यात्रा से गुजरती हुई अपने वर्तमान को भली भाग पहचानती और इसी के आधार पर बोलती है कि–" मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरी इतिहास जैसी चीज में एसिडिटी होगी शायद वर्तमान कुछ ज्यादा अच्छी तरह ऐड करने के लिए में अति सुंदर मूर्ति कलिकथा वाया बाईपास कब मुक्तक एक आदर्श के खो जाने का है और जब आप खोए हुए आदर्श की पड़ताल करते हैं तो आपको अतीत की तरफ जाना ही होता है यह भी संयोग रहा कि जब मैं लिख रही थी तो भारत आजादी की 50वीं वर्षगांठ मना रहा था यह जो किशोर बाबू का चरित्र है इसमें 50 साल एक समझौते का जीवन जिया जहां गांधी 5–10 के नोट में तब्दील हो जाते हैं वही किशोर बाबू जबरदस्ती बात करते हैं उनके लिए वर्तमान में जगह नहीं बचती."

आज कुल मिलाकर पूंजीवाद और भोक्तावाद के साथ विकास के इस दौर में समाज की नैतिकता खत्म होती जा रही है और हमारी परंपरागत संस्कृति के मूल आधार को तोड़कर मनुष्य के अंदर संवेदनहीनता लगातार पैदा की जा रही है.अलका सरावगी ने इस उपन्यास में कोलकाता शहर की पूरी सांस्कृतिक विरासत को जैसे जीवंत कर दिया है.इस उपन्यास के माध्यम से अलका सरावगी कोलकाता और मां मारवाड़ी की साझी संस्कृति दिखाने की कोशिश की है उनके अनुसार इतिहास कांत यानी अतीत की निरर्थक था उपभोक्तावाद यानी तत्काल एकता का वर्चस्व तथा मूल्यों का अंत यानी भविष्य के प्रति जवाबदेही से मुक्ति लेकिन मित्रों को तोड़ते हुए इतिहास पर लज्जित होने के बजाय उससे सीख लेकर वर्तमान का सही निर्देशन करने की सलाह देती हैं और साथ ही वह उन पारंपरिक मूल्यों, संघर्षों, विचारों तथा रोगियों को भी पड़ताल करती है जिन्हें बाईपास करने का हमारी संस्कृति का लोक छिन्न–भिन्न हो रहा है।

वहीं मृणाल पांडे अपने उपन्यास 'पटरंगपुर पुराण' के माध्यम से अपने देश की विविध सांस्कृतिक छवि को दिखाने की कोशिश करती हैं.इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने अपने देश की सामासिक सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक आर्थिक और भौगोलिक पहलुओं को दिखाने की कोशिश की है यहां भी आम जनता लगातार शासकों,लुटेरों और पूंजीपतियों से त्रस्त थी और यहां भी पलायन की समस्या देखी जा सकती है। भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमें अंग्रेजों के समय से ही दिखाई देने लगता है पर हमारी भारतीय संस्कृति की विशेषता है कि वह अन्य संस्कृतियों को आत्मसात करती हुई चलती है। हम जानते हैं कि हमारी संस्कृति में जब से पाश्चात्य संस्कृति घुल मिल गई तो उसके समाज में कुछ सकारात्मक और कुछ नकारात्मक प्रभाव दिखाई देते हैं भारत की किसी संस्कृति के बारे में मृणाल पांडे ने लिखा है–"सुना कि एक साहब ने स्कूल की अंग्रेजी की किताबों में लिखा ठहरा कि बिना विलायती विद्या के काले लोगों का कोई भविष्य नहीं."

यह हम सभी जानते हैं कि साहित्य,समाज और संस्कृति इन तीनों का संबंध अन्योन्याश्रित होता है; यानी इन तीनों का आपसी सामंजस्य बहुत जरूरी है। यह माना जाता है कि साहित्य की शुरुआत और साहित्य का अंत साहित्य और समाज से ही संभव होता है। समाज की अभिव्यक्ति साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश है और समाज को सुसंस्कृत और संस्कार संस्कावान बनाना उसका अंतिम लक्ष्य भी था। समकालीन दौर स्त्री कथाकार नासिरा शर्मा अपने समूचे कथा साहित्य में अपने समय की धड़कन को पहचानते हुए उस समय की सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक और सांस्कृतिक पहलुओं को बड़ी सुष्मिता सबके साथ उजागर करती नाचना जी ने अपने

उपन्यासों में समकालीन सांस्कृतिक पहलुओं को बड़ी गहराई से हुआ है उनका मानना है कि साहित्य किसी भी देश के समाज को समझने के लिए बहुत जरूरी है.उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा था कि–" दर्शन साहित्य घटना दिनांक और नामों का ब्यौरा नहीं है बल्कि जनमानस की जवान का बयान होता है। जिसमें इतिहासकार की कलम से ज्यादा सच्चाई होती है जो व्यथा के तालाब से और आंखों के कतरों से नहाकर निकलती है। इसमें जमीनी बातें होती हैं। एक पात्र द्वारा कहीं मामूली से संवाद द्वारा समय की धड़कन को पकड़कर उस समय की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का अंदाजा बखूबी लगा सकते हैं। यदि ऐसा न होता तो पुराने ग्रंथों को विरासत की तरह संभालने का चलन भी ना होता और वर्तमान की जनता को हम अतीत के संदर्भ संदर्भों से मापते भी नहीं और न समय के बदलते परिवेश को ही समझ पाते." इस तरह हम देखते हैं कि नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में भले ही अलग–अलग परिवेश है, विषय है, कथानक है लेकिन उसका एक केंद्र बिंदु है सब के सांस्कृतिक मूल्यों और तत्वों में एक सामंजस्य बना कर रखना। नासिरा शर्मा का उपन्यास मध्य पूर्व एशिया और भारत की सांस्कृतिक स्थिति को दिखाने के लिए महत्वपूर्ण उपन्यास है.सभी लोगों ने अपने धर्म और संस्कृ ति के अनुसार अपनी स्वतंत्रता और अपनी मान्यताएं बदल दी है इस उपन्यास के माध्यम से दुबई और इलाहाबाद की संस्कृतियों का अद्भुत संगम दिखाई देता है। जैसे दोनों देशों की विवाह प्रथा बिल्कुल अलग अलग है। भारत में लड़की वाले लड़के वालों को विवाह में दहेज देते हैं लेकिन वहां लड़के वालों को लड़की को दहेज देना पड़ता है। इसलिए स्थानीय युवक विदेशी लड़कियों से शादी करते हैं क्योंकि विदेशी लड़कियां विवाह में दहेज नहीं लेती.यही वजह है कि मुंबई दुबई में अविवाहित स्त्रियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। इस समस्या के समाधान के लिए वहां की सरकार नवविवाहित जोड़े को 70000 दिरहम देती है इस संदर्भ में इस उपन्यास में कैथरीन बताती है कि–"यहां लड़के वाले दहेज देते हैं और विदेशी लड़की तो दहेज लेती नहीं इस बढ़ती बीमारी पर रोक लगाने के लिए यहां की सरकार ने एक तरकीब निकाली है खांसी कामयाबी हुई है।"

किसी भी देश की संस्कृति का नष्ट होना उस देश के समूचे वजूद का नष्ट होना जैसा है.क्योंकि जब भी किसी देश में बाहरी आक्रांताओं ने उस देश के साहित्यकारों को नष्ट किया तो कहीं ना कहीं उस देश की संस्कृ ति भी नष्ट होती गई,क्योंकि साहित्य ही संस्कृति का प्राण है वह संस्कारों का पुण्य है साहित्य को नष्ट करने का मतलब है उस देश को उसकी जड़ों उसकी इतिहास और संस्कृति से काटना है। नासिरा शर्मा ने इसी बात को अपने उपन्यासको निहित किया है। इनके समूचे कथा साहित्य में परिवारों की जीवन गाथाओं,उनकी कहानियों को लेकर समकालीन सांस्कृतिक पहलुओं की परतों को खोलने की कोशिश की गई है.यह उपन्यास इलाहाबाद और लखनऊ 2 शहरों की गंगा जमुनी संस्कृति और रूबरू कराती है। इस उपन्यास का का प्रधान नायक रोहन इलाहाबाद में रहता है और नायिका रूही लखनऊ में नासिरा शर्मा ने इस उपन्यास के कथानक के माध्यम से समाज के धार्मिक सामाजिक रीति–रिवाजों उनकी सामाजिक संस्कृतियों की आपसी सरोकारों को दिखाने की कोशिश की है। नासिरा शर्मा लिखती है कि– "इस्लाम धर्म में बौद्धिक व्याख्या करने और अन्वेषण की एक परंपरा है जिसको इज्तिहाद कहते हैं। इसके अंतर्गत शताब्दियों से न्यायाधीश और धर्माधिकारी कुरान की तालीम के अर्थ पर वाद विवाद करते हैं और इस पर भी की आधुनिक विचारों और हालात पर एक कैसे लागू हो। सुन्नी इस्लामी पंत ने सदियों पहले एतिहाद को छोड़ दिया था मगर सीओ ने इस वीडियो परंपरा को बनाए रखा एतिहाद का इस्लामी कानून में बड़ा महत्व है क्योंकि सरिया एक तत्वों का संचय है, सूचीबद्ध दीपावली नहीं. इतिहास से दिए गए फैसले का मत का अर्थ है कि न्याय करने वाला वर्तमान हालात और स्थिति को गौरव सांचे में ढालकर देखता है। एक तरफ तो इतिहास सामाजिक कायदे पर लचीलापन लेता आता है और ऐसी दिलचस्प जगह बना डालता है कि आधुनिक जीवन में इस्लामी मूल्यों एवं परंपराओं का पालन आसान हो। लेकिन इसी लचीलापन का दूसरा पहलू यह भी है कि इतिहास और इस्लामी कानून व्यवस्था को परिवर्तनशील बुनियाद पर खड़ा कर देता है। इस लिहाज ने हमें पत्थर की लकीर जैसी अपवर्त्य नीता के बोध से मुक्त रखा है कि हम कुरान के समय व्याख्या करते रहें।"

निष्कर्ष–

अतः हम कह सकते हैं कि कथा साहित्य में चाहे वह कहानी हो या उपन्यास,सभी जगह अलग दृअलग रूपों में हमें सामासिक संस्कृति के दर्शन हो जाते हैं.कथाकार असगर वजाहत के कथा साहित्य में सामासिक संस्कृ ति के व्यापक फलक में हमने उनके पूर्व कथा साहित्य में सामासिक संस्कृति, उनके समकालीन पुरुष कथाकारों

के कथा साहित्य में सामासिक संस्कृति और उसके समकालीन महिला कथाकारों के कथा साहित्य में सामासिक संस्कृति को विस्तार से समझने की कोशिश की है.यह कोशिश आगे के अध्यायों के लिए बहुत उपयोगी साबित होगी.

संदर्भ

1. मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ, राजकमल प्रकाशन, प्र.सं– 2009, पृ–87–88
2. मेरे भोजपत्र रूचंद्रकांता, प्रभात प्रकाशन, प्र.सं–2008, पृ–64
3. चंद्रकांताः ऐलान गली जिंदा है, राजकमल प्रकाशन, प्र.सं– 2004, पृ–105–106
4. मधुवती पर्वरू वर्ष–41, अंक–1, जनवरी–2009, पृष्ठ 15
5. ज्योतिष जोशीरू उपन्यास की समकालीनता, भारतीय ज्ञानपीठ,प्र.सं– 2016,पृ– 19
6. गीतांजलि श्री, हमारा शहर उस बरस,राजकमल प्रकाशन,प्रथम संस्करण–2016,पृ–10
7. वागर्थ, रवींद्र कालिया, जुलाई– 2004
8. मृणाल पांडे, पटरंगपुर पुराण, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्र.सं–2010,पृ–51
9. नासिरा शर्मारू एक मूल्यांकन, सं– एम. फिरोज. अहमद, सामयिक बुक्स, प्र.सं–2010, पृ–87
10. सं–ललित शुक्लरूनासिरा शर्माः शब्द और संवेदना की पृष्ठभूमि, किताबघर प्रकाशन, प्र.सं–2012, पृ–391
11. नासिरा शर्मा, पारिजात, किताबघर प्रकाशन, प्र. सं– 2011,पृ–187–188

Cite this Article-

'डॉ0 पूनम चालिया', 'महिला कथाकार और उनकी सामासिक संस्कृति', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:04, April 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i4004
Published Date- 08 April 2025